अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah

(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual, E-Journal)

ISSN: 3108-1541

Vol.2, Issue 1,Year 2025, pp 1-11

URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2024-2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सापेक्ष भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में शिक्षकों की भूमिका

डॉ विभा यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग,महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा नीति है जिसमें एक पारदर्शी और प्रगतिशील व्यवस्था, जागरुक एवं कौशल युक्त नागरिक, प्रभावशाली एवं समावेशित शिक्षा प्रणाली, भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र के साथ ही उन्नत तकनीकों के द्वारा अपने देश को विकास के उच्च स्तर तक ले जाने जैसी दूरगामी विचारधारा सम्मिलित है। विगत कुछ वर्षों में भारत को अधिक आकर्षक, उन्नत एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए डिजिटलीकरण, कौशल उन्नयन, स्वरोजगार, स्वच्छता, समावेशी विकास एवं व्यवस्था-उपागम जैसे कार्यक्रम चलाए गए। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में अविस्मरणीय सफलता हासिल की और विकास के इसी क्रम में भारत अब विकसित देशों के श्रेणी में खड़े होने को तत्पर है। भारत को वैश्विक ज्ञान के सापेक्ष महाशक्ति के इस स्वप्न को पूर्ण करने का दायित्व मुख्यता: शिक्षकों पर है क्योंकि सदियों से शिक्षक एक राष्ट्र निर्माता के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी भारत की विरासत

Article Publication:

Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:

डॉ विभा यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग,महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

Email: vibhayadav265@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

एवं परंपराओं को संभालता हुआ, नवीन तकनीकों से संतुलन स्थापित करते हुए देश के विकास में सहयोग प्रदान करता रहा है। माना कि आज उन्नत तकनीक एवं नवाचार ने शिक्षकों की भूमिका में बदलाव ला दिया है किंतु अभी भी शिक्षकों के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य भारत के एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के स्वप्न को पूर्ण करने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना है। इस शोध लेख के जरिए हम राष्ट्र के भावी निर्माण में शिक्षकों के अथक परिश्रम एवं सतत योगदान का अध्ययन करेंगे। प्रस्तुत शोध लेख में विश्लेषणात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

शब्द संकेतः-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वैश्विक ज्ञान महाशक्ति, शिक्षकों की भूमिका

भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली 5+3+3+4 की शैक्षिक संरचना के रूप में प्रस्तावित है। शिक्षा के इन सभी विद्यालयी स्तरों पर विभिन्न शिक्षक कार्यरत हैं जो देश की युवा पीढ़ी के भविष्य को तत्परता से संवारने में लगा हुआ है। यह शिक्षक ही है जो शैक्षिक प्रक्रिया, छात्र निपुणता और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति स्वयं के दायित्व को न केवल महसूस करता है अपितु उसके प्रति स्वयं को समर्पित भी कर देता है। इसीलिए कहा गया कि अच्छे राष्ट्र का निर्माण योग्य शिक्षकों द्वारा ही संभव होता है। अतः शिक्षक की सामाजिक गरिमा, आर्थिक स्थिति एवं स्वप्रत्यय राष्ट्र के विकास में प्रतिबिंबित होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में इस बात की पुष्टि की गई है कि वर्तमान समय में शिक्षकों की स्थिति में बदलाव परिलक्षित हो रहा है। शिक्षकों के प्रशिक्षण में गुणवत्ता वृद्धि, स्थानांतरण, सेवा शर्तें, कार्य दशायें और अधिकारों में होने वाले बदलाव के फलस्वरुप शिक्षकों की गुणवत्ता में कमी महसूस की जा रही है। राष्ट्र की प्रगति हेतु शिक्षकों की प्रेरणा एवं सशक्तिकरण को आवश्यक बताते हुए शिक्षकों से सर्वोत्तम निष्पत्ति के लिए समाज में उच्चतर दर्जा, आदर एवं मान-सम्मान आवश्यक है ताकि योग्य युवाओं को इस पेशे में आकर्षित किया जा सके। एक समृद्धशाली व आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण का जो स्वप्न देखा, उसे अपने मजबूत इरादों, हौसलों एवं इच्छाशक्ति से प्रगति के पथ पर अग्रसर करने का कौशल शिक्षकों में ही निहित है। यह एक ऐसे समाज की कल्पना है जिसमें शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को मूल्यों, ज्ञान एवं

कौशलों से युक्त किया जाए और उनके भीतर प्रजातंत्र, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक विभिन्नता, लैंगिक समानता एवं पर्यावरण के प्रति सम्मान की भावना का विकास हो। विदित हो कि वैश्विक ज्ञान महाशक्ति कोई साधारण संकल्प नहीं है, यह देश को विकासशील की श्रेणी से उठाकर विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने का संकल्प है। इसके लिए जितना अधिक आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता है उससे कहीं अधिक मानवीय संसाधनों की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसा मानव संसाधन जो ना केवल योग्य एवं कुशल हो बल्कि अपनी तथा समाज की भावी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में भी समर्थ हो। 21वीं सदी नई दायित्वों का वहन कर रही है, ऐसे में हमें किस तरह की शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होगी एवं बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षा का क्या उद्देश्य होगा? तथा अधिगम की व्यवस्था कैसे की जानी चाहिए? यह सभी प्रश्न इसी लक्ष्यपूर्ति के प्रथम सोपान से संबंधित है। क्योंकि विश्व युवा होता जा रहा है, मानवाधिकार एवं विश्व शांति के लिए प्रेरणायें बढ़ रही है, विभिन्न समाज पहले से अधिक एक दूसरे के करीब आ रहे हैं किंतु हिंसा और द्वंद का भी मानव जीवन में समावेश होता जा रहा है। एक तरफ नए शक्ति स्रोतों का उदय हो रहा है तो दूसरी तरफ असमानता की खाई भी बढ़ती जा रही है। सफलता और समावेशी विकास की संभावना तो प्रबल है किंतु चुनौतियां भी गहरी एवं जटिल है। अतः बदलते वैश्विक परिदृश्य के साथ ही शिक्षा को भी बदलना होगा। समाज की महत्वकांक्षाओं एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षक को भी नवीन रूप में सामने आना होगा।

सतत परिवर्तन युक्त एवं एक दूसरे पर निर्भर समाज में ज्ञान और नवीनतम विकास के प्रमुख चालक होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि अच्छी गुणवत्ता युक्त शिक्षा एवं अधिगमकर्ता की अच्छी प्रगति देश की एकता एवं विकास के आधारभूत संसाधन है इसी संदर्भ में प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए यूनेस्को ने एक मजबूत रणनीति की आवश्यकता बताई है (यूनेस्को एजुकेशन स्ट्रेटेजी) जो 2014 से 2021 तक शिक्षा में अपनी प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित कर सके तथा संगठन की 8 वर्षीय मध्यम अवधि की रणनीति के अनुरूप विजन और मिशन संबंधी कार्यक्रमों में तीन प्राथमिकताओं का निर्धारण किया गया है जो निम्न हैः-

1- सभी के लिए समानता एवं आजीवन अधिगम हेतु उपयुक्त शिक्षा प्रणाली को विकसित करना।

2- शिक्षार्थियों को रचनात्मक, जिम्मेदार, सशक्त एवं वैश्विक नागरिक बनाना।

3- भविष्य के लिए शिक्षा एजेंडे को आकार देना।

यदि ध्यान दिया जाए तो उपरोक्त तीनों रणनीतियों की पूर्ण सफलता में एक शिक्षक की अहम भूमिका है। क्योंकि शिक्षक ही वह आधार है जो विद्यार्थियों को आजीवन अधिगम देने तथा उन्हें रचनात्मक, योग्य एवं कुशल नागरिक बनाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकता है। किसी भी देश की भविष्य में क्या बुनियादी आवश्यकताएं हो सकती हैं इसका भी पूर्व आकलन अध्यापक ही करता है तथा उसी के अनुरूप भावी पीढ़ी को प्रशिक्षित करता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सापेक्ष भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षक एक नियंत्रक के रूप में छात्रों की मूल प्रवृतियों का परिमार्जन करते हुए उन्हे उचित आकार प्रदान करता है। शिक्षक एक प्रोत्साहक के रूप में छात्रों की हताशा को दूर करते हुए, सतत रूप से आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। शिक्षक किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए सर्वोत्तम मानवीय संसाधन होता है क्योंकि शिक्षक ही देश की प्रगति के लिए योग्य एवं कुशल नागरिकों का निर्माण करते हैं। शिक्षा के एक प्रमुख आकलन कर्ता के रूप में छात्र के व्यक्तित्व के उचित विकास में सहयोग प्रदान करता है। शिक्षक एक व्यवस्थापक के रूप में शैक्षिक गतिविधियों का संपादन करता है। शिक्षक प्रतिभागी के रूप में राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान करता है। शिक्षक एक ट्यूटर के रूप में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संपन्न करता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में शिक्षकों की महती भूमिका को देखते हुए यह ज्ञात करना आवश्यक है कि भारत को वैश्विक महाशक्ति के रूप में विकसित करने में शिक्षकों की क्या भूमिका है?

शोध प्रश्न

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल अभिप्राय क्या है?
2. भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति राष्ट्र बनाने में शिक्षकों की क्या भूमिका है?

उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध विधिः - प्रस्तुत शोध लेख में विश्लेषणात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण:

प्रथम उद्देश्य

किसी भी विषय वस्तु की संकल्पना वास्तव में एक कल्पना ही होती है लेकिन यह कोरी कल्पना नहीं बल्कि तार्किक व संगत परिस्थितियों पर आधारित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा भी एक तार्किक एवं संगत परस्थितियों पर आधारित संकल्पना है। इसमें एक ऐसे विशिष्ट भारत की कल्पना की गई है जिसमें अभी तक व्याप्त कोई भी समस्या नहीं होंगी और व्यक्ति एक गौरव पूर्ण जीवन जी रहा होगा। लोग उच्च एवं पूर्ण रूप से शिक्षित होंगे। अत्याधुनिक एवं विशाल आधारभूत संरचना का नेटवर्क होगा और हमारा देश वैश्विक रुप से प्रभावशाली होगा, जहां की हवा, पानी, गांव एवं शहर सभी स्वच्छ होंगे तथा गरीबी, बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार से मुक्त होगा। आज भारत की जीडीपी लगभग 2.5 ट्रिलियन डॉलर की है, जो क्रय शक्ति समता के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और यह विश्व में सर्वाधिक तेजी से विकास कर रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। (वर्ल्ड बैंक 2011)

भारत सरकार ने 2030 तक नए भारत के निर्माण का संकल्प लेने की बात कही, जिसमें:-

- भ्रष्टाचार मुक्त भारत के पक्ष में खड़ा होना
- स्वच्छ भारत की दिशा में काम करना
- कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा देना
- रोजगार सृजक बनना ना की रोजगार तलाशने वाला
- महिलाओं की अगुवाई वाले विकास को प्रोत्साहित करना
- प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना
- दिव्यांग लोगों का सहयोग करना
- शांति एकता एवं सद्भाव के लिए काम करना इत्यादि

अर्थात लक्ष्य 2030 एक ऐसे नए भारत का निर्माण है जो 35 साल से कम उम्र के 65 फ़ीसदी युवाओं एवं जागरूक महिला समूहों का भारत होगा। एक ऐसा नया भारत जहां गरीब आदमी कुछ मांगने के बजाए कुछ करने के अवसर की राह देख रहा होगा।

द्वितीय उद्देश्य

राष्ट्रीय निर्माण में एक शिक्षक निम्नलिखित भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए देश के विकास में अप्रतिम योगदान प्रदान करता है -

1-सतत विकासः शिक्षक एक केंद्रीय चिंतक के रूप मेंः-

- सामाजिक चुनौतियां एवं तनाव को दूर करने में सहयोग
- पारिस्थितिक तनाव को दूर करने में सहयोग करना
- जनसंख्या वृद्धि के सापेक्ष आर्थिक उत्पादन और खपत के अनिश्चित पैटर्न में संतुलन स्थापित करना
- पूंजीवाद एवं बढ़ती असमानताओं के मध्य संतुलन स्थापित करना
- असहिष्णुता एवं हिंसा के मध्य वैश्विक अंतर्क्रिया को बनाए रखना
- मानवाधिकारों की रक्षा करना
- नए ज्ञान क्षितिज की खोज करना
- जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता का विस्तार करना
- नवीन वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की पहचान करने में सहयोग करना
- युवाओं में बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करने के साथ ही रचनात्मकता एवं नवाचारों का समावेश करना

2-वैकल्पिक उपागमों के विस्तार में शिक्षक की भूमिकाः-

- वैकल्पिक ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करना
- बहूआयामी संसार में शिक्षा को पुनर्गठित करना
- मानवीय दृष्टिकोण में सुधार करना
- शिक्षा के प्रति मानवीय उपागम का विकास करना

- तर्क एवं मूल्यों पर आधारित एकीकृत दृष्टिकोण का विकास करना
- 21वीं सदी में प्रकृति एवं समाज के संबंध में व्यक्ति की गरिमा, क्षमता एवं कल्याण को बनाए रखना
- ज्ञान के विस्तार के लिए अधिगमकर्ता को सीखने के लिए पूरी गति से सक्षम बनाना

3-शिक्षा एवं रोजगार के बीच बढ़ते अंतर को कम करने में शिक्षक की भूमिकाः-

- अकेले शिक्षा ही बेरोजगारी की समस्याओं का हल नहीं है तथापि एक शिक्षक का दायित्व होता है कि युवाओं के बीच बढ़ती हताशा को कम करें
- युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों को मजबूत करना
- मानवीय गतिशीलता के बदलते पैटर्न को समझना
- शिक्षा और बदलते कार्य जगत के संबंध को पुनर्विचार करना
- प्रतिभा पलायन को प्रतिभा लाभ में बदलना
- श्रमिकों एवं शिक्षार्थियों की योग्यता कुशलता एवं गतिशीलता में वृद्धि करना
- खुली और लचीली आजीवन शिक्षा प्रणाली पर जोर देना
- एक विविध एवं अंतर आश्रित दुनिया में नागरिक शिक्षा को पुनरावलोकन करना

4-सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत संबंधों के मध्य शिक्षक की भूमिकाः-

- भारतीय शिक्षा और ज्ञान को वैश्विक परिदृश्य में लाने के लिए नवीन ज्ञान का निर्माण, नियंत्रक प्रणाली , समीकरण सत्यापन के साथ ही भौतिक ज्ञान का उपयोग करना |
- आधारभूत सिद्धांतों की रक्षा करना |
- समाज के नागरिकों और अन्य भागीदारों की भूमिका में वृद्धि करना |
- एक छोटी सी इकाई पर गहराई से काम करने के अवसर के साथ व्यापक सामान्य ज्ञान प्राप्त करना |
- ना केवल व्यावसायिक कौशल हासिल करने के साथ ही अन्य कई स्थितियों से निपटने और टीम में कार्य करने की क्षमता का विकास करना |

- किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करना तथा उसकी बढ़ती स्वायत्तता, निर्णय क्षमता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के साथ कार्य करने में सक्षम होना, अन्योन्याश्रितता की प्रशंसा करना तथा अन्य लोगों के प्रति समझ विकसित करना |

इसके साथ ही यूनेस्को ने राष्ट्र निर्माण में एक शिक्षक की निम्न भूमिका को बताया हैः -

(1) गरीबी और भूखः-

शिक्षा एवं आर्थिक विकास तथा आय वितरण एवं गरीबी निवारण के मध्य बहुत अच्छा संबंध स्थापित है। कई कारक इस रिश्ते को प्रभावित करते हैं सबके लिए शिक्षा के लक्ष्यों की ओर त्वरित प्रगति गरीबी और भूख निवारण के लिए आवश्यक कदम है। विश्व खाद्य कार्यक्रम में अनुमान लगाया गया है कि लगभग 870 लाख लोग भूखे पेट सोते हैं प्राथमिक विद्यालय के लगभग 66 लाख बच्चे भूखें पेट कक्षा में उपस्थित होकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग देते हैं। (एफएओ 2014)

(2) शांति, सुरक्षा एवं प्रजातंत्रः-

यह दावा इस विश्वास पर आधारित है कि लोकतंत्र की सफलता एवं स्थाई विकास के लिए अच्छी तरह से काम करने वाले जिम्मेदार नागरिकों की आवश्यकता होती है। क्योंकि अधिक शांतिपूर्ण सहिष्णु समावेशी सुरक्षित टिकाऊ राष्ट्र के निर्माण हेतु समाज एवं व्यक्ति को स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर समस्याओं को समझने एवं उन्हें हल करने के लिए तत्पर होना चाहिए।

(3) सूचना एवं संचार तकनीकीः-

स्थापना में सहयोग सूचना क्रांति के इस युग में आवश्यकता है कि तकनीकी की क्षमता का उचित दिशा में प्रयोग करके उसे शिक्षा की बेहतरी के लिए प्रयोग किया जाए।

(4) ज्ञान, अर्थव्यवस्था और श्रम बाजारः-

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का बढ़ता महत्व शिक्षा को आर्थिक विकास के प्रमुख निर्धारक के रूप में अभिव्यक्त करता है। अतएव राष्ट्र के आर्थिक विकास में एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(5) सतत विकास और संयोजन पद्धतियांः-

पर्यावरणीय गिरावट खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है और रियासते बढ़ रही है। वर्तमान आर्थिक विकास का मॉडल अधिक टिकाऊ नहीं है। ग्रीन इकोनॉमी की अवधारणा के स्थायित्व एवं वैश्विक संक्रमण का सामना करने के लिए शिक्षा को एक शक्तिशाली औजार के रूप में प्रयोग करने का दायित्व शिक्षक पर ही होता है।

निष्कर्षः-

इस प्रकार हम कर सकते हैं कि शिक्षक योग्य एवं कुशल विद्यार्थियों के निर्माण द्वारा राष्ट्र के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुनिया का सबसे अच्छा और सबसे बड़ा पेशा एक शिक्षक का है। क्योंकि एक राष्ट्र का भविष्य उन शिक्षकों पर निर्भर करता है जो देश की भावी पीढ़ियों को आकार देते हैं। शिक्षक को स्कूल में राष्ट्र निर्माण में सहायक गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए तथा उनके मध्य विभिन्न गतिविधियों के संचालन के माध्यम से पर्याप्त जागरूकता पैदा करनी चाहिए। प्रत्येक शिक्षक एक प्रबुद्ध नागरिक के रूप में छात्रों को उचित आकार देने में भूमिका निभाता है।

अतः भारत को यदि श्रेष्ठ राष्ट्र बनाना है तो यह तभी संभव होगा जब हर आदमी की ताकत से इसे बल मिले। एक ऐसा भारत जो नवाचार से संचालित होगा, कठोर मेहनत एवं सृजनात्मकता से आगे बढ़ेगा, एक ऐसा भारत जहां शांति, एकता और भाईचारा होगा और जो भ्रष्टाचार, आतंकवाद, काले धन और गंदगी से मुक्त होगा। शिक्षा प्रणाली में सुधार के सापेक्ष विभिन्न योजनाओं, कृत्यों एवं नीतियों का सृजन होता है, जो निसंदेह गुणवत्ता के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन साथ ही साथ कौशल विकास रोजगार की एक बहुत ही संकीर्ण दृष्टि से शिक्षा के कारपोरेट मॉडल को प्रोत्साहित करती है। किसी भी देश की लगातार बदलती हुई संरचना प्रणाली में स्वयं को सार्थक सिद्ध करने के लिए शिक्षक को स्कूल की इमारतों के बाहर एक महत्वपूर्ण एवं विस्तारित भूमिका निभानी होगी, जिसमें डिजिटल टूल्स का पूरी तरह से उपयोग करने, संचार करने जैसें आधारभूत कौशलों का समावेश हो। क्योंकि एक शिक्षक को आंतरिक रुप से वित्तीय लक्ष्यों से प्रेरित होने के बावजूद राष्ट्र निर्माण हेतु बौद्धिक लक्ष्य की पूर्ति को प्राथमिकता देनी चाहिए। शिक्षक को इस तरह की विस्तृत भूमिका के साथ ही माता पिता समुदाय, व्यापार जगत के नेताओं और नीति-निर्माताओं का श्रोता मात्र ही नहीं बनना बल्कि राजनैतिक, नौकरशाही एवं स्कूल प्रबंधन के सापेक्ष नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका भी

अदा करनी होगी। अतः शिक्षक को स्वामी विवेकानंद के वक्तव्य को कभी नहीं भूलना चाहिए - उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य को प्राप्त ना कर लो |

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
- डबल्यू. एफ. ओ. ((2014), हंगर स्टेटिस्टिक्स, रोम, फूड एंड एग्रीकल्चर आर्गेनाइजेशन ऑफ द नेशंस, वर्ल्ड फूड प्रोग्राम
- www.wfp.org/hunger/stats
- डेनियल, जे. एस.(2009), हाइलाइट्स ऑफ द यूनेस्को ग्लोबल फोरम ऑन रैंकिंग एंड अकाउंटेबली, यूजेस एंड मिसयूजेज, पेरिस, यूनेस्को
- www.unesco.org/new/fileadmin/multimedia/HQ/ED/pdf/Ranking/stamenka.johndaniel.pdf
- ओ.ई.सी.डी. (2013), इन्वेस्टमेंट फार ग्रीन ग्रोथ, पेरिस, आर्गेनाइजेशन फार इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट, नवंबर
- www.oecd.org/environment/green.htm
- यूनेस्को(1972), लर्निंग टू बीः द वर्ल्ड ऑफ एजुकेशन टुडे एंड टुमारो, पेरिस, यूनेस्को
- यूनेस्को एजुकेशन स्ट्रेटेजी (2014), यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल साइंटिफिक एंड कल्चरल आर्गेनाइजेशन, फ्रांस
- यूनेस्को (2015), रीथिंकिंग एजुकेशन टुवार्ड्स अ ग्लोबल कॉमन गुड्स, यूनेस्को पब्लिशिंग, फ्रांस
- www.unesco.org/education/pdf/15-60.pdf
- वर्ल्ड बैंक (2011), वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्टः कनफ्लिक्ट, सिक्योरिटी एंड डेवलपमेंट, वाशिंगटन, डीसी, वर्ल्ड बैंक